- जनजातीय इतिहास-लेखन का आलोचनात्मक विश्लेषण
- आदिवासी विकास, यूरोपीय बनाम भारतीय मॉडल
- जनजातीय विकास, सामाजिक-आर्थिक समस्याओं, उग्रवाद और शासन से संबंधित मुद्दे

## शोध पत्र सम्बन्धी आवश्यक तिथियां

| | |
|---|---|
| शोध पत्र सारांश प्राप्ति (Abstract Submission) | : 15 मार्च, 2023 |
| विस्तृत शोध पत्र प्राप्ति (Full Article Submission) | : 31 मार्च, 2023 |
| पंजीकरण (Registration) | : 22 अप्रैल, 2023 |

## पंजीकरण शुल्क

| | |
|---|---|
| शोध पत्र लेखक विद्वान | : रु. 1000.00 |
| शोधार्थी | : रु. 500.00 |
| विद्यार्थी : | : रु. 200.00 |
| खाता नाम | : ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान |
| खाता संख्या | :**11500210001851** यूको बैंक, हमीरपुर, हि.प्र. |
| आईएफएससी कोड | :**UCBA0001150** |

## आवास एवं भोजन

प्रतिभागी विद्वानों तथा शोधकर्त्ताओं के आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान द्वारा की जाएगी। स्थानीय यातायात की व्यवस्था शोध संस्थान आवश्यकतानुसार उपलब्ध करवाएगा।

## शोध पत्रों का प्रकाशन

शोध संस्थान संगोष्ठी के चयनित मूल और उच्च गुणवत्ता वाले शोध पत्रों को (हिंदी और अंग्रेजी) प्रकाशित करेगा। लेख आदर्श रूप से उचित संदर्भों और टिप्पणियों के साथ 3000-5000 के बीच लिखे जाने चाहिए। हिंदी में शोध पत्रों का फॉन्ट **kruti dev 010**, आकार 12 और अंग्रेजी के लिए **Times New Roman** आकार 12 में होना चाहिए। सार और शोध पत्रों को **seminarneri@gmail.com** पर ईमेल भेज सकते हैं।

***Regisration Link :***

*https://forms.gle/uqYDPBG1piSasbSk7*

SCAN ME

## मार्गदर्शक मण्डल

**श्री विजय मोहन कुमार पुरी**
अध्यक्ष, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

**प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री**
सलाहकार, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार

**डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय**
राष्ट्रीय संगठन सचिव, अ.भा.इ.सं.यो.समिति

**श्री भूमिदत्त शर्मा**
महासचिव, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

**डॉ. चेतराम गर्ग**
निदेशक, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

**प्रो. सत प्रकाश बंसल**
कुलपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला हि.प्र.

**प्रो. डी.डी. शर्मा**
कुलपति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, मण्डी हि.प्र.

**प्रो. कौशल के. शर्मा**
सी.एस.आर.डी, जे.एन.यू., नई दिल्ली

**प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी**
डी.डी.यू, गोरखपुर, यू.पी.

**प्रो. नारायण सिंह राव**
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, हि.प्र.के. वि.वि.

**प्रो.ओम प्रकाश शर्मा**
निदेशक - वैचारिक पक्ष, इ.शो.सं. नेरी, हमीरपुर

**प्रो. भाग चन्द चौहान**
निदेशक-सह-वैचारिक पक्ष, इ.शो.सं. नेरी, हमीरपुर

## आयोजन समिति

प्रो. ए.के. सिंह
प्रो. राजेश शर्मा
डॉ. राकेश कुमार शर्मा
डॉ. विकास शर्मा
डॉ. सुरेन्द्र नाथ शर्मा
श्री प्यार चन्द परमार
श्री नरेन्द्र कुमार नन्दा
श्री देशराज शर्मा
डॉ. सूरत ठाकुर
डॉ. एम.आर. शर्मा
श्री विजय शर्मा
श्री जगबीर चंदेल
डॉ. मनोज शर्मा
डॉ. शिव भारद्वाज
डॉ. नन्दलाल ठाकुर
डॉ. सीमा चौधरी
श्रीमती रोशनी भारद्वाज
डॉ. राम लाल
डॉ. जे.पी. शर्मा
डॉ. महेश शर्मा
डॉ. कंवर चन्द्रदीप
डॉ. राघवेन्द्र यादव
डॉ. राजकुमार
डॉ. विनय कुमार
डॉ. दिनेश कुमार
डॉ. थुक्टन नेगी
डॉ. ज्योति
श्रीमती राम्या ऐरी
श्री बारू राम ठाकुर
श्री राजेन्द्र कुमार
श्री सन्नी अटवाल
श्री रामपाल
श्री लक्की शर्मा
श्री ऋषि भारद्वाज


**पत्राचार का पता**
**ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान**
गांव व डा. नेरी, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)- 177001
ई-मेल : seminarneri@gmail.com, दूरभाष : 01972-262905


ॐ
नामूलं लिख्यते किञ्चित्

# भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

## राष्ट्रीय परिसंवाद

# पश्चिमोत्तर भारत की अनुसूचित जन-जातियों का समाज, पर्यावास और अर्थव्यवस्था

**कलियुगाब्द 5125, विक्रमी संवत् 2080,**
**वैशाख शुक्ल 02–03 (22–23 अप्रैल, 2023)**

## आयोजक

**ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान**
नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

## सहयोग

इतिहास विभाग एवं भूगोल विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला

## परिसंवाद स्थल

**ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान**
गांव व डा. नेरी, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)- 177001
ई-मेल : seminarneri@gmail.com,


संयोजक
**डॉ. अंकुश भारद्वाज**
सह-आचार्य, इतिहास विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला हि.प्र.
*Ph. No. 9876035002*
*Email: ankushbhardwaj333@gmail.com*

आयोजन सचिव
**डॉ. बी.आर. ठाकुर**
सह-आचार्य, भूगोल विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला हि.प्र.
*Ph. No. 7876743913*
*Email: brthakur53@gmail.com*

## ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान के बारे में

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान, हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला में शिवालिक की हरी-भरी घाटी में, कुनाह नदी के तट पर स्थित है। संस्थान इतिहास, संस्कृति और अन्य विषयगत क्षेत्रों में मौलिक और अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए समर्पित है। यह भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं की कथित व्याख्याओं को मूलभूत, वैकल्पिक और भारतीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। वर्ष 2023 में, संस्थान ने ऐतिहासिक अनुसंधान, अकादमिक और संबद्ध गतिविधियों जैसे पत्रिका और पुस्तकों के प्रकाशन, व्याख्यान, संगोष्ठी, प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के आयोजन के क्षेत्र में अपनी सेवाओं के दो दशकों को पूर्ण किया है। संस्थान की परिकल्पना और स्थापना भारतीय ज्ञान परम्परा के गुरुकुल मॉडल पर की गई है, साथ ही संस्थान शैक्षणिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान करता है। संस्थान में आने वाले शोधकर्त्ताओं और शिक्षाविदों को एक समृद्ध पुस्तकालय, वाचनालय तथा सुसज्जित सम्मेलन कक्ष, आरामदायक गेस्टहाउस और अन्य आवासीय सुविधाओं के साथ समर्थन और सुविधा प्रदान की जाती है। शोध संस्थान तक देश के सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है। अंब-अंदौरा निकटतम रेलवे स्टेशन है, जो लगभग 45 किलोमीटर या डेढ़ घंटे की दूरी पर है और निकटतम हवाई अड्डा गग्गल, कांगड़ा में है जो 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

## राष्ट्रीय संगोष्ठी के बारे में

हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान राज्यों के साथ-साथ जम्मू और कश्मीर, लद्दाख और चंडीगढ़ के केंद्र शासित प्रदेश उत्तर पश्चिमी भारत में शामिल है। प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र ने भारतीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सप्त-सिंधु क्षेत्र, जो कभी एशिया और मध्य पूर्व से होकर रोम तक का एक प्रमुख व्यापार मार्ग था, ऐतिहासिक रूप से और साथ ही पारंपरिक रूप से, भारत का प्रवेश द्वार रहा है। अपनी सांस्कृतिक और भौगोलिक समृद्धि के बावजूद, इस उत्तर-पश्चिम सीमांत क्षेत्र को पूरी अवधि के दौरान लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विदेशी आक्रमणकारी इस क्षेत्र को भारत में प्रवेश करने और इस क्षेत्र का शोषण करने और अस्थिर करने के लिए चुनते हैं। हालांकि, इस क्षेत्र के लोगों की सांस्कृतिक लोकाचार और गहराई से जुड़ी हुई विश्वास प्रणाली ने उन्हें इन हमलों से बचने में सक्षम बनाया। इस क्षेत्र के उल्लेखनीय समुदायों में बाल्टी, बकरवाल, बेदा, भील, ब्रोकपा, चंगपा, डमरिया, डामोर, धनका डोगरा, गद्दी, गरासिया, गुर्जर, कथोडी, किन्नौरा, लाहौला, पंगवाल, लांबा, मीना और अन्य शामिल हैं।

कुल आबादी के बाकी हिस्सों में जनजातीय समुदायों का जनसंख्या अनुपात इस क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण है जो इसके समावेशी चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, इसमें भारत के कुल भूमि क्षेत्र का लगभग 14.98% और इसकी जनसंख्या का 10.61% शामिल है। 2011 में इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या 12,85,07,839 दर्ज की गई है, जो 49,24,865 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैली हुई है। उत्तर पश्चिमी भारत का सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास न केवल आकर्षक है, बल्कि लोककथाओं की सांस्कृतिक परंपराओं और प्रथागत प्रथाओं के संदर्भ में भी अद्वितीय है। हालाँकि, प्रारंभिक प्रकृति की विकासात्मक प्रक्रिया के इतिहास, संस्कृति और गति की हमारी समझ अधिकांश इतिहासकारों द्वारा आदिवासी लोगों के इतिहास की उपेक्षा के कारण सीमित और धुंधला है, जिनका ध्यान और प्राथमिकता मुख्य रूप से साम्राज्यों, राजवंशों और शासक के इतिहास का निर्माण करना था। प्रस्तावित संगोष्ठी का उद्देश्य जनजातीय इतिहास के निर्माण, पहचान और जनजातीय इतिहास के स्रोतों को एकत्रित करने की प्रक्रिया शुरू करना, जनजातियों और जनजातीय संस्कृति के काम करने वाले विद्वानों का एक समूह बनाना और भारत की प्रमुख जनजातियों के इतिहास को संकलित करना है। यह संगोष्ठी अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास और समाज, उनकी सदियों पुरानी परम्पराएं और इक्कीसवीं सदी की बदलती गतिशीलता और विकास पथ पर हमारी समझ को बढ़ाने में काफी मददगार साबित होगी। ब्रिटिश प्रशासकों और औपनिवेशिक विचारकों ने आदिवासी समुदायों पर इस विचार के साथ काम करना शुरू किया कि आदिवासी लोग असभ्य और जंगली लोग हैं जिनकी अपनी कोई संस्कृति और सभ्यता नहीं है। उन्होंने पहाड़ियों और घाटियों और मैदानों के लोगों को विभाजित करने के लिए जिला पहचान बनाई, रेखा प्रणाली और बहिष्कृत, आंशिक रूप से बहिष्कृत क्षेत्रों की अवधारणा पेश की। औपनिवेशिक इतिहासकारों और सामाजिक वैज्ञानिकों की विचारधारा सभ्यतागत संबंधों के विपरीत विभाजन और अलगाव के सिद्धांत पर आधारित थी, जो अनादिकाल से भारतवर्ष को एकजुट करती है। इस प्रकार आदिवासी संस्कृति, विरासत और गौरवशाली इतिहास की समृद्धि को देखते हुए औपनिवेशिक विचारों के पुनर्निर्माण और जनजातीय समुदायों के इतिहास के पुनर्निर्माण की आवश्यकता है, जो कि सनातनी संस्कृति का अभिन्न अंग थे।

## प्रस्तावित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के लक्ष्य/उद्देश्य

- जनजातीय इतिहास के निर्माण के लिए जनजातीय इतिहास, अवधारणाओं, विचारों और रणनीतियों की समीक्षा और विश्लेषण।
- जनजातीय इतिहास के स्रोतों की पहचान करना।
- भारतीय स्रोतों का उपयोग करके आदिवासी इतिहास को फिर से देखने की प्रक्रिया शुरू करना।
- क्षेत्र की प्रमुख जनजातियों के निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाना।

## संगोष्ठी के प्रमुख विषय

संगोष्ठी का मुख्य विषय उत्तर पश्चिमी भारत (सप्त-सिंधु क्षेत्र) में अनुसूचित जनजातियों के इतिहास के विभिन्न पहलुओं के इर्द-गिर्द घूमता है। जनजातीय लोगों के इतिहास पर ध्यान देने के लिए इस संगोष्ठी को विभिन्न उप-विषयों में विभाजित किया गया है। हालांकि, सम्मानित विद्वानों को संगोष्ठी के मुख्य विषय के व्यापक मापदंडों के भीतर अपने शोध पत्रों का योगदान करने की स्वतंत्रता है। संगोष्ठी के व्यापक विषय निम्नलिखित हैं:

- जनजाति और जाति के विचार की उत्पत्ति, औपनिवेशिक/पश्चिमी विद्वानों का जनजातीय इतिहास/समाज का निर्माण
- जनजातीय समुदायों की उत्पत्ति और प्रवासन
- सृजन का विचार, जनजातीय पौराणिक कथाएं और जनजातीय संस्कृति पर धर्मशास्त्रों का प्रभाव
- जनजातीय अध्ययन के स्रोत वैदिक, महाकाव्य शास्त्र, पुराण, पौराणिक कथाएं, मौखिक साहित्य, अभिलेखीय रिकॉर्ड, अदालती इतिहास, पुरातात्विक साक्ष्य, जनगणना रिकॉर्ड आदि।
- मानव इतिहास, जनजातीय राजतंत्र और राजवंशों के विभिन्न कालखंडों में जनजातीय लोगों की भूमिका
- स्वराज के संघर्ष में जनजातीय लोगों की भागीदारी
- सनातनी संस्कृति/विरासत को संरक्षित करने के लिए जनजातीय क्षेत्रों में औपनिवेशिक पैठ और विदेशी हस्तक्षेप और जनजातीय प्रतिरोध
- जनजातीय समाजों की धार्मिक विश्वास प्रणाली, सामाजिक रीति-रिवाज, परंपराएं और संस्कार
- भारत की प्रमुख जनजातियाँ, इतिहास और उनकी संस्कृति पर केस स्टडी